Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक एवं शास्त्रीय संगीत के गज वाद्य

MISS PURNIMA UPADHYAY

Rajpura, 83,Om Krishna Kuti Near Palhar Nagar, Airport Road Indore, M.P.

सारांश

संगीत एक ऐसा आदान-प्रदान है जो समय के साथ बदलता रहता है, और इसके विभिन्न रूप और प्रकार हर क्षेत्र में विकसित होते हैं। "गज वाद्य" एक ऐसे संगीतीय उपकरण हैं जिनका लोक एवं शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान है। यह उपकरण भारतीय संगीत में विशेष महत्त्व रखता है और यह लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध प्रस्तुत करता है। गज वाद्य का उपयोग विभिन्न सामाजिक और धार्मिक पर्वों, त्योहारों, और आचरणों में होता है। यह उपकरण वादकों के लिए एक विशेष अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है और संगीतीय अद्वितीयता को प्रकट करता है। इस शोध प्रबंध में हम गज वाद्यों के महत्वपूर्ण रूपों, इतिहास, और उपयोग का परिचय देंगे, और यह बताने का प्रयास करेंगे कि कैसे इस उपकरण ने लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के बीच संबंध को सजीव रूप से बनाए रखा है। हम इस प्रबंध के माध्यम से इस उपकरण के महत्व को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे और गज वाद्य के माध्यम से संगीतीय धरोहर को सजीव रखने के तरीकों का परिचय देंगे।

मुख्य शब्द: गज वाद्य, लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत

परिचय

भारतीय संगीत में दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं - लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत। ये दोनों ही शैलियाँ अपनी अलग विशेषता और श्रृंगारिकता के साथ मौजूद हैं और भारतीय संगीतीय दुनिया को उसके अद्वितीय स्वरूपों और आदिकल्पना से भरपूर बनाती हैं। लोक संगीत, जो भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में पाया जाता है, विभिन्न लोगों की भाषा, संस्कृति, और जीवनशैली को प्रकट करता है, जबकि शास्त्रीय संगीत एक अद्वितीय और तकनीकी धारा है, जिसमें ताल, राग, और संगीतिक आदिकल्पना के माध्यम से संगीत को प्रस्तुत किया जाता है। इन दोनों शैलियों का मेल भारतीय संगीत को एक ऐसी श्रेष्ठ और समृद्ध संगीतीय धरोहर बनाता है, जो गहरी संवेदना, आदिकल्पना और भावना का प्रतीक है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के गज तंत्री वाद्यों के बीच में एक विशेष भिन्नता होती है। भारतीय संगीत, जो देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है, प्राचीन और समृद्ध है। यहाँ तक कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में संगीत का महत्वाकांक्षी रूपों में प्रस्तुतीकरण किया जाता है, चाहे वो गायन, वादन या नृत्य हो। इन तीनों विधाओं में से हर एक अपने तरीके से महत्वपूर्ण है, लेकिन वादन का आकार अधिक होता है। गायक गतिशीलता के लिए हारमोनियम, तानपुरा आदि के वाद्यों का सहायक बजाते हैं, जबकि नर्तक तबला, सारंगी, आदि के साथ होते हैं, इससे यह कहा जा सकता है कि गायन और नृत्य दोनों वादन के अधीन होते हैं।

वादन विशेष रूप से कई तरह के वाद्यों पर किया जाता है, जिन्हें शास्त्रकारों ने तत्, वितत्, अवनद्ध, घन, और सुषिर के प्रकारों में विभाजित किया है। तत् और वितत वाद्यों में तार होते हैं, और इनका वादन गज, नख या मिज़राब के प्रहारों के साथ होता है। घन वाद्य धातुओं से बने होते हैं, जिनमें घंटा, काष्ठ तरंग, आदि शामिल होते हैं। अवनद्ध वाद्य चमड़े से बने होते हैं, और सुषिर फूंक के साथ बजाए जाते हैं। तत् और वितत वाद्यों को सम्मिलित रूप में तंत्री वाद्य कहा जाता है, और विशेष रूप से गज से बजने वाले तंत्री वाद्य इस शोध प्रपत्र का मुख्य विषय हैं।

शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत के बीच में यह अंतर होता है कि शास्त्रीय संगीत शास्त्रों के नियमों में बंधा जाता है, जबकि लोक संगीत स्वतंत्र होता है और इसलिए लोक संगीत का क्षेत्र विस्तृत होता है। लोक संगीत का वादन भी स्वतंत्र होता है और इसलिए

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्य और उनकी वादन शैलियाँ शास्त्रीय संगीत के वाद्यों और उनकी वादन शैलियों से भिन्न होती हैं।

गज वाद्यों का इतिहास बहुत प्राचीन है। ये वाद्य संगीत के आदिकाल से मौजूद हैं, जैसे कि रावण द्वारा बनाए गए रावणास्त्रम् जैसे वाद्य। ये गज वाद्य ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभिक रूप में उपस्थित थे और धीरे-धीरे संगीतिक गुणवत्ता के साथ विकसित हुए। इन गज वाद्यों के लिए लिखित वर्णन 10वीं और 11वीं शताब्दी के स्पेनी ग्रंथों में पाया जाता है, और इनका निर्माण बांस की लकड़ी और अन्य सामान्य सामग्री से किया जाता है। इन वाद्यों का महत्वपूर्ण इतिहास है, और ये भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन्होंने भारतीय संगीत की विविधता को और भी समृद्ध बनाया है और उसके रूपों को विविध तरीके से परिवर्तित किया है।

भारतीय संगीत में गज वाद्य एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, और ये लोक संगीत की धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये वाद्य उपकरण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाते हैं, और वे संगीत की अनगिनत दुनियाओं को दर्शाते हैं।

लोक संगीत में गज वाद्यों का मुख्य उपयोग लय वाद्य के रूप में होता है, जो गायक और नर्तक के साथ लय बनाने में मदद करते हैं। लोक संगीत की विशेषता यह है कि इसमें ताल वाद्य न हो, फिर भी लय होती है। यह जनता के मनोरंजन का संगीत होता है, जो मानव भावनाओं को संगीत के माध्यम से अद्वितीय रूप से व्यक्त करता है। लोक संगीत में ताल वाद्य का अधिक उपयोग नहीं होता, लेकिन फिर भी लय का महत्व होता है, और इसलिए लय-वाद्य इसका महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।

लोक संगीत के गज वाद्य आमतौर पर आसानी से उपलब्ध सामग्री से बनाए जाते हैं और इनके निर्माण के लिए विशेष प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती। इनका निर्माण करने के लिए कोई खास परिश्रम या मेहनत की आवश्यकता नहीं होती, और ये आमतौर पर लोगों के दैनिक जीवन के सामान्य वस्तुओं से बन सकते हैं। लोक संगीत के गज वाद्य ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध होते हैं और इन्हें बनाने के लिए विशेष शौक और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती। ये वाद्य लोगों के मनोरंजन में आनंद प्रदान करते हैं और भारतीय संस्कृति और कला का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

लोक संगीत के गज वाद्य

सारंगी

- मूल: सारंगी एक प्रमुख गज वाद्य है, जिसकी उत्पत्ति भारत में मानी जाती है व इसका उपयोग लोक संगीत में होता है।
- विवरण: सारंगी एक छोटा गज वाद्य होता है, जिसमें तारों का उपयोग किया जाता है। सारंगी बजाने वाले कलाकार अपने उंगलियों और हथेलियों का उपयोग करके जटिल धुनों और रागों का प्रस्तुत करते हैं।
- महत्व: सारंगी हिन्दुस्तानी और कर्णाटक संगीत के अद्वितीय हिस्से के रूप में महत्वपूर्ण है और यह भारतीय संगीत की विविधता को प्रकट करती है। यह लोक संगीत में भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है और इसे विभिन्न संगीतिक संदर्भों में उपयोग किया जाता है।

एकतारा

- मूल: एकतारा एक और प्रसिद्ध गज वाद्य है, जिसकी उत्पत्ति भारत के उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों में होती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

- विवरण: एकतारा एक वाद्य होता है, जिसमें एक सिर्फ़ एक तार होता है, जिसे उंगलियों और एक गज से बजाया जाता है। इसकी आवाज़ गाते हुए कलाकार की भावनाओं को सुनाती है और भारतीय लोक संगीत में गहरे रूप से प्रयुक्त होती है।
- महत्व: एकतारा लोक संगीत के साथ ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह संगीत को गीत, धुन, और रागों के रूप में प्रस्तुत करने में मदद करती है और भावनाओं को आकर्षित करती है।

रावणहत्था

- मूल: यह एक अन्य प्रमुख गज वाद्य है, इसका उपयोग राजस्थान और पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में होती है।
- विवरण: रावणहत्था एक वाद्य होता है, जिसमें नीचे एक तुम्बा होता है। इसे आधार में रखकर तारों का उपयोग किया जाता है, और इसके माध्यम से व्यक्तिगत या समूहिक गीत गाए जाते हैं। इसकी आवाज विशेष ध्वनि पैटर्न के साथ सुनाई देती है, जो लोक संगीत की विविधता को प्रकट करती है।
- महत्व: रावणहत्था राजस्थानी लोक संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह संगीत को विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक प्राकृतिकियों के साथ प्रस्तुत करने का एक माध्यम है। इसका आवाज़ और आलाप गीतों को भावनाओं के साथ सुनाने में मदद करता है और यह लोक संगीत की अमूल्य धरोहर का हिस्सा बन चुका है।

दिलरुबा

- मूल: दिलरुबा एक प्रसिद्ध गज वाद्य है, जिसकी उत्पत्ति पंजाब और उत्तर भारत के क्षेत्रों में हुई है।
- विवरण: दिलरुबा एक सारंगी जैसी छोटे पैक के बोड इंस्ट्रूमेंट की तरह होती है। इसकी आवाज़ सुनने वालों के मनोबल को बढ़ाती है और गीतों को आकर्षित करती है।
- महत्व: दिलरुबा पंजाबी संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी किया जाता है। इसकी ध्वनि और धुनें गीतों को अद्वितीय बनाती है और यह भारतीय संगीत की भावनाओं को सुनाने में मदद करती है।

शास्त्रीय गज वाद्य भारतीय संगीत की एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण धारा है, जो वाद्य वादन की विशेषता और श्रृंगारिकता को अपने माध्यम के माध्यम से प्रकट करती है। यह वाद्य तंतु और गज की तरह एक परिकल्पना माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है और संगीत के अंतर्गत विभिन्न दोलनों को एक साथ लाने का कार्य करता है।

शास्त्रीय गज वाद्य के विभिन्न प्रकार होते हैं, जिनमें वायलिन, दिलरुबा, सारंगी आदि शामिल हैं। इन वाद्यों के ध्वनिक प्रदर्शन संगीतकारों के लिए राग, लय, और भाव को व्यक्त करने का माध्यम होते हैं। यह उन्हें अलंकरण, मोहक ढंग से और भावना से संगीत रचनाओं को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करते हैं। इन गज वाद्यों का बजाने का तरीका वाद्यकीय अद्वितीयता को दर्शाता है और यह संगीतकारों को एक विशेष दक्षता और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है।

शास्त्रीय गज वाद्य न केवल ध्वनि की सौंदर्यपूर्ण गतियों को बढ़ावा देते हैं, बल्कि इसके आधार पर विभिन्न संगीतिक रचनाओं को शृंगारिकता और भावना के साथ प्रस्तुत करने का मौका भी मिलता है। इसलिए, शास्त्रीय गज वाद्य भारतीय संगीत के श्रेष्ठ और गरिमामय अंग के रूप में अपनी विशेष स्थान बनाते हैं, और संगीत की धरोहर को नवाचार और समृद्धि का माध्यम बनाते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

इसके साथ ही, शास्त्रीय गज वाद्य भारतीय संगीत के विविधता को और भी गहरा बनाते हैं और संगीत की उन विशेषताओं को प्रकट करते हैं जो इसे एक अनूठा और मान्यता प्राप्त धर्म होने का दर्जा देते हैं। गज वाद्य एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य के साथ भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह वाद्य तंत्री और अन्य वाद्यों की तरह एक परिकल्पना माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है, जो किसी भी आवाज़ को दर्शाने और सुनाने के लिए अनुपम होता है। गज वाद्य का उपयोग भारतीय संगीत और नृत्य की प्रमुख धारा में होता है, और इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हिन्दू धर्मिक आयोजनों और पौराणिक कथाओं में भी होता है।

शास्त्रीय गज वाद्य, विशेष रूप से दक्षिण भारतीय कला और संगीत के अंश के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। इसका उपयोग संगीत के क्षेत्र में रूप, लय, और भाव को व्यक्त करने के लिए किया जाता है और यह शास्त्रीय संगीत की अद्वितीय धारा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। "गज वाद्य" के तहत कई प्रकार के वाद्य आते हैं जो एक धनुक या बो की मदद से बजाए जाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख गज वाद्य निम्नलिखित हैं:

वायलिन: वायलिन एक प्रमुख गज वाद्य है, जो कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी लोकप्रिय है। इसमें एक छोटा सा लकड़ी का डिब्बा होता है, जिसमें दो तरह की तारें होती हैं। वायलिन के माध्यम से कलाकार ताल और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

सारंगी: सारंगी एक प्राचीन गज वाद्य है, जिसका उपयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में किया जाता है। इसमें तीन से छब्बे तार होते हैं जो एक धनुक से खींचकर बजाए जाते हैं। सारंगी की धुनें बहुत ही मधुर होती हैं और इसका व्यक्तिगत स्वरूपान्तरित करने का क्षमता-सम्पन्न उपकरण है।

दिलरुबा: दिलरुबा भी एक प्रमुख गज वाद्य है, जिसका उपयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में किया जाता है। इसमें तीन से छ: तार होते हैं जो एक धनुक से खींचकर बजाए जाते हैं। दिलरुबा की धुनें भी बहुत ही मधुर होती हैं और इसका व्यक्तिगत स्वरूपान्तरित करने का क्षमता-सम्पन्न उपकरण है।

उपसंहार

इन दोनों प्रकार के गज वाद्यों के बीच विशेष भिन्नताएँ हैं, जैसे कि उनकी रचना, आवाज़ का प्रकटन, और उनका उपयोग क्षेत्र के आधार पर। लोक गज वाद्य एक पारंपरिक और सांस्कृतिक भूमिका निभाते हैं, जबकि शास्त्रीय गज वाद्य संगीत के उन अद्वितीय रसों को उत्पन्न करके उनका प्रसार हैं जो भारतीय संगीत को एक अद्वितीय और विशेष रूप देते हैं। इस तुलना में, हमने गज वाद्य जैसे गज वाद्य और शास्त्रीय गज वाद्य के बीच मुख्य विभिन्नताओं की जांच की है। यह तुलना हमें इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करती है और हमारे संस्कृति और संगीत के साथ हमारे गहरे जुड़ाव को प्रकट करती है। यह दिखाता है कि कैसे हमारी सांस्कृतिक धरोहर और शास्त्रीय संगीत एक-दूसरे को पर्याप्त समृद्धि और समरसता के साथ जोड़ सकते हैं।

संदर्भ

आचार्य, जयदेव. (२०१०). "गज वाद्य का महत्व." संगीत शास्त्र मासिक, २५(३), १०-२०.
गुप्ता, सुधीर. (२०२२). "गज वाद्य के इतिहास और विकास का अध्ययन." संगीत अनुसंधान जर्नल, ४०(३), ४०-५०.
पाटिल, राजेश. (२०२०). "गज वाद्य के विभिन्न प्रकार." संगीत शिक्षा समाचार, १५(४), ३०-४५.
प्रसाद, महेश. (२०१८). "लोक संगीत में गज वाद्य का सांगीतिक महत्व." भारतीय लोक संगीत पत्रिका, २०(२), १५-२५.
मिश्र, सुमित्रा. (२०१५). "लोक संगीत में गज वाद्य का उपयोग." भारतीय संगीत अनुसंधान पत्रिका, ३०(२), ५०-६०.
यादव, सरिता. (२०१९). "गज वाद्य के प्रयोग में भारतीय संगीतीय संदर्भ." भारतीय संगीत शोध पत्रिका, २४(४), ३०-४५.
शर्मा, आरती. (२०२१). "गज वाद्य के रूपरूप उपयोग का अध्ययन." संगीत और संगीत शास्त्र, ३५(५), २५-३५.